YouTube Video

Tavamithram Sarvada

भज गोविन्दं

Bhaja Govindam

Shri Adi Shankaracharya

1/6

भज गोविन्दं भज गोविन्दं । जा गोविन्दं । गोविन्दं । जा गोविन्दं । वार्वा को जोवि जा पेविन्दं । पशाजीवित् जार्जरदेहे वार्वा को जोवि ने पृच्छित गेहे । गा वार्वा विवार्व वार्वो वे हे तावत् चार्वो विवार्व वे हे तावत् वार्वो वे हो पायं भार्व विवार्व वे हे तावत् चार्वो वे हो पायं भार्वा विवार वे वे हे तावत् वार्वो वे हो पायं भार्वा विवार वे वे हे तावत् चार्वो वे हो पायं भार्वा विवार वे वे हे तावत् चार्वो वे हो पायं भार्वा विवार वे वे हे तावत् वार्वो वे हे पारंव वे वे वे हे तावत् चार्वो वे हे पारंव वे वे वे हे तावत् चार्वो वे हे पारंव वे		<u></u>	,
सम्प्राप्ते सिन्निहेत काले नहि नहि रक्षित डुकृङ्करणे ॥ १॥		1	
सम्प्राप्ते सित्रिहिते काले नहि नहि रक्षिति दुकृङ्करणे ॥ १॥ ४॥ व्यव्हित्ते मानास्त्राष्ट्रां मा गा मोहावेशम् । एतन्मासवापां विचेत्त्त्य वारं वारम् ॥ ३॥ विवेद्द्रास्त्राम् । विद्विद्ध्याध्यम् । एतन्मासवापां विद्विद्ध्याध्यम् । एतन्मासवापां विद्विद्ध्याध्यम् । एतन्मासवापां विद्विद्ध्याध्यम् । एतन्मासवसादिविकारं मनित्रि विद्वाध्यम् । एतन्मासवसादिविकारं मनित्रि विद्वाध्यम् । एतन्मासवसादिविकारं मनित्रि विद्वाध्यममानम्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ विद्वाध्याध्यम् । विद्वाध्याध्याप्त्रम् । ॥ ४॥ यावद्वित्तेपार्जनसक्त- स्तावित्रज्ञित वार्षे देहे वार्तां कोऽपि न पृच्छित गेहे ॥ ५॥ यावस्वनो निवसित देहे तावत्युच्छित कुशलं गेहे । गतवित वार्यो देहापाये भार्य विश्वयति तस्मिन्काये ॥ ६॥ ॥ ६॥ विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । भू॥ विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । भू॥ विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । भू॥ विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । विद्वाध्याप्त्रम् । भू॥ विद्वावित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छित गेहे ॥ ५॥ विद्वाध्याप्त्रम् । भू॥ विद्वाध्याप्त्रम् । भूष्टि । भूष्य । भूष्टि । भ	गोविन्दं भज मूढमते ।		·
sampraapte sannihite kaale nahi nahi rakshati dukrijn-karaNe मृद्ध जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धि मनिस वितृष्णाम् । यल्लाभसे निजकर्मापातं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २॥		1 -	_
मूढ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धि मनसि वितृष्णाम् । यल्लभसे निजरुर्भोपातं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २॥		1	shall not rescue you in the
मूढ जहींहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धि मनसि वितृष्णाम् । यल्यभसे निजकर्मोपातं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २॥		nahi nahi rakshati dukrijn-	hour of your demise.
कुरु सद्बुद्धि मनसि वित्ष्णाम् । यल्लभसे निजकर्मापातं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २॥	·	karaNe	
प्रत्यभर्से निजकर्मोपातं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २॥	मूढ जहीहि धनागमतृष्णां	mood-ha jahiihi dhanaagama-	2. O fool! Abandon your thirst
प्रत्यभर्से निजकर्मोपातं वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ २॥	कुरु सदुबुद्धिं मनसि वितृष्णाम् ।	trishhnaam	for amassing wealth; dedicate
प्राचित्र निर्माप्य विषान् । श्र ॥ अllabhase nija-karmopaattam vittam tena vinodaya chittam the past. नारीस्तनभरनाभीदेशं हष्ट्वा मा गा मोहावेशम् । एतन्मासवसादिविकारं मनसि विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३॥	यल्लभसे निजकर्मीपात्तं	kuru sadbuddhim	your mind to the
श्रीlabhase nija-karmopaattam vittam tena vinodaya chittam the past. 3. Avoid drowning in delusion through vurrestrained passions and lust triggered by a woman's physical form. These are mere changes in the flesh. Do not forget to repeatedly remember this. 4. A person's life is as uncertain as raindrops quivering on a lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 4. A person's life is as uncertain as raindrops quivering on a lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 4. A person's life is as uncertain as raindrops quivering on a lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old	वित्तं तेन विनोटय चित्तम	manasi vitrishhNaam.	contemplation of the real. Find
ारीस्तनभरनाभीदेशं हष्ट्वा मा गा मोहावेशम् । एतन्मांसवसादिविकारं मनिस विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३॥ विलनीदलगतजलमितिरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् । विद्धि व्याध्यभमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ यावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावित्रजपरिवारो रक्तः । पश्चाज्जीवित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छिति गेहे ॥ ५॥ यावत्वत्वो निवसित देहे तावत्व्वर्जि कुशलं गेहे । गतवित वार्यो देहापाये भार्य बिश्यित तिस्मन्काये ॥ ६॥ स्वावित्वर्यात्वर्या कर्षा क	•	yallabhase nija-karmopaattam	contentment in what unfolds
नारीस्तनभरनाभीदेशं एतन्मांसवसादिविकारं प्रतन्मांसवसादिविकारं प्रतन्मांसवसादिविकारं मनिस विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३॥	" ("	vittam tena vinodaya chittam	through your own actions in
हष्ट्वा मा गा मोहावेशम् । एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३॥			the past.
पतन्मांसवसादिविकारें मनिस विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३॥ विज्ञीवतमतिराव कार्य क्षा क्षा कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार कार्य कार	•	naarii-stana-bhara naabhii-	3. Avoid drowning in delusion
पतन्मांसवसादिविकारें मनिस विचिन्तय वारं वारम् ॥ ३॥	दृष्ट्वा मा गा मोहावेशम् ।	desham	through unrestrained passions
प्रक्षित विचन्तय वारं वारम् ॥ ३॥ vesham etan-maamsa-vasaadi vikaaram manasi vichintaya vaaram vaaram vaaram naliniidalagata jalamatitaralam tadvajjiivitamatishayachapalam viddhi vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam lokam shokahatam cha samastam uyali qila qila qila qila qila qila qila q	एतन्मांसवसादिविकारं	drishhtvaa maagaa-mohaa-	
etan-maamsa-vasaadi vikaaram manasi vichintaya vaaram vaaram निर्वाचित्वगतजलमिततरलं तद्वज्जीवितमितशयचपलम् । विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ यावद्वित्तोपार्जनसक्त-स्तावन्निजपित्वरो रक्तः । पश्चाज्जीवित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छिति गेहे ॥ ५॥ यावत्पवनो निवसित देहे तावत्पृच्छित कुशलं गेहे । गतवित वायो देहापाये भार्या बिभ्यित तस्मिन्काये ॥ ६॥ अ () () () () () () () () () () () () () () ()		vesham	woman's physical form. These
प्रांक्षवर्गम manasi vichintaya vaaram viddhi vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam Vaavad-vittopaarjana sakta-staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko 'api na prichchhati gehe vaartaam ko 'api na prichchhati gehe vaavat-pavano nivasati dehe taavat-prichchhati kushalam gehe vaavat vaayau dehaa-paaye bhaaryaa bibhyati tasmin- Do not forget to repeatedly remember this. 4. A person's life is as uncertain as raindrops quivering on a lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.	•	etan-maamsa-vasaadi	_
प्रविद्याध्या प्रविद्याचित्र प्रविद्याध्या प्रविद्याचित्र प्रविद्याध्या प्रविद्याचित्र प्रविद्याचित्र प्रविद्याचित्र प्रविद्याध्या प्रविद्याचित्र प्रविद्याच्याचित्र प्रविद्याचित्र प्रविद्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच			
निनीदलगतजलमिततरलं तद्वज्जीवितमितशयचपलम् । विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam यावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाज्जीवित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छित गेहे ॥ ५॥ यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छित कुशलं गेहे । गतवित वायो देहापाये भार्या बिश्यित तस्मिन्काये ॥ ६॥ त्रावित्रच्छित तस्मिन्काये ॥ ६॥ naliniidalagata jalamatitaralam tadvajjiivitamatishayachapalam viddhi vyadhyabhimaanagrastam lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.		manasi vichintaya vaaram	remember this.
तद्वजीवितमितशयचपलम् । विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam यावद्वित्तोपार्जनसक्त- सतावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाजीवित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छिति गेहे ॥ ५॥ vaavat-prichchhati kushalam gehe utavat-prichchhati kushalam gehe gatavati vaayau dehaa-paaye haaryaa bibhyati tasmin- sa raindrops quivering on a lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his well-being. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.			
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ यावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाज्जीवित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छिति गेहे ॥ ५॥ यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छिति कुशलं गेहे । गतवित वार्यो देहापाये भार्या बिभ्यित तस्मिन्काये ॥ ६॥ viddhi vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam Yaavad-vittopaarjana sakta- staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko'api na prichchhati gehe प्रविच्छित कुशलं गेहे । प्रविच्छित कुशलं गेहे । भार्या बिभ्यित तस्मिन्काये ॥ ६॥ viddhi vyaadhyabhimaanagrastam lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his well- being. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.		I	-
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ यावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाज्जीवित जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छिति गेहे ॥ ५॥ यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छिति कुशलं गेहे । गतवित वार्यो देहापाये भार्या बिभ्यित तस्मिन्काये ॥ ६॥ viddhi vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam Yaavad-vittopaarjana sakta- staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko'api na prichchhati gehe प्रविच्छित कुशलं गेहे । प्रविच्छित कुशलं गेहे । भार्या बिभ्यित तस्मिन्काये ॥ ६॥ viddhi vyaadhyabhimaanagrastam lotus leaf. Recognise that the entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his well- being. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.	तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।	1	
लोकं शोकहतं च समस्तम् ॥ ४॥ यावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाष्णीवति जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥ ५॥ यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छित कुशलं गेहे । गतवित वार्यो देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ vyaadhyabhimaanagrastam lokam shokahatam cha samastam Yaavad-vittopaarjana sakta- staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko 'api na prichchhati gehe taavat-prichchhati kushalam gehe gatavati vaayau dehaa-paaye bhaaryaa bibhyati tasmin- entire world is vulnerable to disease, ego, and sorrow. 5. Notice the affection shown by those around a man as long as he can support his family. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his well- being. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.	विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं		_
। ४		1	
पावद्वित्तोपार्जनसक्त- स्तावन्निजपरिवारो रक्तः । पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥ ५॥ पावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे । गतवित वायो देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ Yaavad-vittopaarjana sakta- staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko 'api na prichchhati gehe vaartaam ko 'api na prichchhati gehe vaartaam ko 'api na prichchhati gehe vaartaam ko 'api na prichchhati being. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.	*	lokam shokahatam cha	disease, ego, and sorrow.
पश्चाज्वीवित जर्जरदेहें aार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहें ॥ ५॥ staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko'api na prichchhati gehe vaartaam ko'api na prichchhati gehe vaartaam ko'api na prichchhati gehe vaartaam ko'api na prichchhati but when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 4 यावत्पवनो निवसति देहें तावत्पृच्छति कुशलं गेहें । गतवित वायो देहापाये प्रविभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ staavannija parivaaro raktaha pash-chaajjiivati jarjara-dehe vaartaam ko'api na prichchhati But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.			
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहें वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहें ॥ ५॥			
चार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥ ५॥ vaartaam ko 'api na prichchhati gehe uquartaam ko 'api na prichchhati kushalam to even speak to him. 4. पावत्पवनो निवसति देहे qaavat-pavano nivasati dehe taavat-prichchhati kushalam gehe uquartaam ko 'api na prichchhati bim, no one at home bothers to even speak to him. 5. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him.		1	_
वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥ ५॥ vaartaam ko'api na prichchhati gehe bing. But when old age weakens him, no one at home bothers to even speak to him. यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे । गतवित वायौ देहापाये gehe गर्वा विभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ vaartaam ko'api na prichchhati bin, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his wellbeing. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.	पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे	1 -	
ा ५॥ gehe him, no one at home bothers to even speak to him. यावत्पवनो निवसति देहे yaavat-pavano nivasati dehe तावत्पृच्छति कुशलं गेहे । गतवित वायो देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ gehe bhaaryaa bibhyati tasmin- him, no one at home bothers to even speak to him. 6. While alive, family members inquire kindly about his well-being. But when the soul leaves the body, even his wife flees in fear.		1	_
यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे । गतवित वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ प्रविध्यति वायौ देहापाये शिक्ष्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥ प्रविध्यति तस्मिन्काये ॥ ६॥	· ·	gehe	
तावत्पृच्छति कुशलं गेहे । taavat-prichchhati kushalam jinquire kindly about his well- गतवित वायो देहापाये gehe being. But when the soul भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये gatavati vaayau dehaa-paaye leaves the body, even his wife bhaaryaa bibhyati tasmin- flees in fear.			•
गतवति वार्यौ देहापाये gehe being. But when the soul leaves the body, even his wife bhaaryaa bibhyati tasmin- flees in fear.	The state of the s	I	-
भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये gatavati vaayau dehaa-paaye leaves the body, even his wife bhaaryaa bibhyati tasmin- flees in fear.	तावत्पृच्छति कुशलं गेहे ।	I -	
भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये gatavati vaayau dehaa-paaye leaves the body, even his wife bhaaryaa bibhyati tasmin- flees in fear.	गतवति वायौ देहापाये	1	<u> </u>
& bhaaryaa bibhyati tasmin- flees in fear.			•
kaaye			flees in fear.
,		kaaye	

बालस्तावत्क्रीडासक्तः तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः । वृद्धस्तावच्चिन्तासक्तः परमे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः ॥ ७॥ का ते कान्ता कस्ते पुत्रः	baalastaavatkriidaasaktah tarunastaavattaruniisaktah . vriddhastaavachchintaasaktah pare brahmani ko.api na saktah kaate kaantaa kaste putraha	7. Childhood slips away with playfulness, youth with attachment to women, and old age with contemplation. Yet, only a few, desire immersion in the ultimate reality. 8. Who is your wife? Who is
संसारोऽयमतीव विचित्रः । कस्य त्वं कः कुत आयात- स्तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः ॥ ८॥	samsaaro 'yamatiiva vichitraha kasya tvam kah kuta aayaata- tattvam chintaya tadiha bhraatah	your son? This samsara is indeed strange. From whom did you originate? From where have you emerged? Brother, contemplate these truths deeply.
सत्सङ्गत्वे निस्सङ्गत्वं निस्सङ्गत्वे निर्मोहत्वम् । निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः ॥ ९॥	satsangatve nissngatvam nissangatve nirmohatvam nirmohatve nish-chalatattvam nish-chalatattve jiivan-muktihi	9. From Satsangha (the company of the wise) arises non-attachment, from non-attachment springs liberation from delusion, paving the way to inner equanimity. And from such equanimity within blooms Jeevan Mukti or liberation in life.
वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः । क्षीणे वित्ते कः परिवारः ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥ १०॥	Vayasi gate kah kaamavikaaraha shushhke niire kah kaasaaraha kshiinevitte kah parivaaraha gyaate tattve kah samsaaraha	10. What purpose does lust serve when youth has passed? What value does a dry lake hold? Where do relatives disappear when the wealth is gone? Where is the world when Truth is known?
मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम् । मायामयमिदमखिलं हित्वा ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा ॥ ११॥	maa kuru dhana jana yauvana garvam harati nimeshhaat-kaalah sarvam maayaa-mayamidam-akhilam hitvaa brahmapadam tvam pravisha viditvaa	11. Do not pride yourself in riches, friends, or youthful vigour, for all of them fade away in a moment. Break free from the illusion of the world of 'Maya' and embrace the eternal Truth.
दिनयामिन्यौ सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः । कालः क्रीडति गच्छत्यायु- स्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥ १२॥	Dina-yaaminyau saayam praataha shishiravasantau punaraayaataha kaalah kriidati gachchhatyaayus- tadapi na mujnchatyaa- shaavaayaha	12. The cycle of daylight and darkness, the transition from dusk to dawn, and the changing seasons of winter and spring are all transient. Time moves on, and life gradually fades away. However, the tempest of desire continues unabated, ceaselessly raging within.

	T	
का ते कान्ता धनगतचिन्ता	kaate kaantaa dhana	13. Why fixate on wealth, O
वातुल किं तव नास्ति नियन्ता ।	gatachintaa	misguided one? Seek guidance.
त्रिजगति सज्जनसङ्गतिरेका	vaatula kim tava naasti	Only righteous company can
भवति भवार्णवतरणे नौका	niyantaa	guide you through the sea of
१३	rijagati sajjanasanga-tiraikaa	existence. Hurry to the boat of
" '\	bhavati bhavaar-navataraNe	Satsangha (the company of the
	naukaa	wise).
जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः	jatilo mundii lujnchhita-	14. Numerous individuals
काषायाम्बरबहुकृतवेषः ।	keshaha	adorn themselves with matted
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढो	kaashhaa-yaambara-bahukrita-	locks or shave their heads
उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः	veshhaha	clean, while others pluck out
१४	pashyannapi cha na pashyati	their hairs. Some don saffron
11 \0 11 11	mood-ho	attire, while others opt for a
	udaranimittam bahu-	variety of colours — all merely
	kritaveshhaha	for sustenance. Despite the
		truth being laid bare before
		them, the foolish remain blind
		to it.
अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं	angam galitam palitam	15. The vigour has departed
दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।	muNdam	from the elderly gentleman's
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं	dashanavi-hiinam jatam	physique; his scalp now barren,
तदपि न मुञ्जत्याशापिण्डम्	tuNdam	his gums devoid of teeth,
84	vriddho yaati grihiitvaa	reliant on crutches for support.
11 59(11	daNdam	Yet, his attachment remains
	tadapi na mujn-chatyaashaa-	steadfast, clutching onto futile
	piNdam	desires with unwavering
		resolve
अग्रे वह्निः पृष्ठे भानुः	agre vahnihi prishht-he	16. See there, reclining amidst
रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः ।	bhaanuhu	warmth from the fire ahead
करतलभिक्षस्तरुतलवास-	raatrau chubuka-samarpita-	and the sun behind; by
स्तदपि न मुञ्जत्याशापाशः	jaanuhu	nightfall, he curls up, seeking
	karatala-bhikshasta-	refuge from the chill. His
11 5411	rutalavaasas-	meagre sustenance, a beggar's
	tadapi na mujn-chatyaashaa-	fare from his cupped hands,
	paashaha	devoured beneath the
		sheltering tree. Yet, within, he
		remains a hapless puppet,
		manipulated by the strings of
		desire.
कुरुते गङ्गासागरगमनं	kurute gangaa-saagara-	17. One might journey to
व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।	gamanam	Gangasagar, undertake fasts,
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन	vrata-paripaalana-mathavaa	and bestow riches in charity!
मुक्तिं न भजति जन्मशतेन	daanam	Yet, devoid of jnana, liberation
_	gnyaanavihiinaha sarvamatena	remains elusive, even after a
॥ १७॥	muktim na bhajati janma-	hundred births.
	shatena	

		.,, c
सुरमंदिरतरुमूलनिवासः शय्या भूतलमजिनं वासः । सर्वपरिग्रहभोगत्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः ॥ १८॥	sura-mandira-taru-muula nivaasaha shayyaa bhuutala majinam vaasaha . sarva-parigraha-bhoga tyaagaha kasya sukham na karoti viraagaha	18. Take up residence in a temple or under a tree, wear a deerskin, and sleep on the earth. Renounce attachments and comforts. With such detachment, contentment is inevitable.
योगरतो वा भोगरतो वा सङ्गरतो वा सङ्गविहीनः । यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं नन्दति नन्दति नन्दत्येव ॥ १९॥	yogarato vaa bhogarato vaa sangarato vaa sangaviihinaha yasya brahmani ramate chittam nandati nandati nandatyeva	19. One might find pleasure in yoga or bhoga, whether attached or detached. Yet, only the one whose mind finds constant delight in Brahman experiences true bliss, none other.
भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता । सकृदिप येन मुरारिसमर्चा क्रियते तस्य यमेन न चर्चा ॥ २०॥ पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।	bhagavad giitaa kijnchida- dhiitaa gangaa-jalalava-kaNikaa piitaa sakridapi yena muraari samarchaa kriyate tasya amsaraa charchaa punarapi jananam punarapi maraNam punarapi jananii jat-hare	20. Let a man glean but a fragment from Gita, sip merely a droplet from the Ganges, offer homage to Murari (Govinda) just once. Then, he shall encounter no dispute with Yama 21. Reborn, deceased anew, rebirth ensues within the mother's womb! Crossing this
इह संसारे बहुदुस्तारे कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥ २१॥	shayanam iha samsaare bahu-dustaare kripayaa 'paare paahi muraare	limitless expanse of amsara is undeniably arduous. Oh Murari! Grant me redemption through Your mercy.
रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः । योगी योगनियोजितचित्तो रमते बालोन्मत्तवदेव ॥ २२॥	rathyaa-charpata-virachita kanthaha puNyaapuNya-vivarjita- panthaha yogii yoga-niyojita-chitto ramate baalon-mattava-deva	22. A monk never lacks clothing as long as there are discarded rags along the road. Liberated from vice and virtue, he continues his journey. Those in communion with the Divine revel in pure bliss, similar to that of a child or an intoxicated person.
कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः । इति परिभावय सर्वमसारम् विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम् ॥ २३॥	kastvam koʻaham kuta aayaatah kaa me jananii ko me taataha iti pari-bhaavaya sarvamasaaram vishvam tyaktvaa svapna vichaaram	23. Who are you? Who am I? Where do we come from? Who are our parents? Reflect on these questions, viewing everything as devoid of essence, and relinquishing the world as a mere illusion.

-0.0.310		
त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णु-	tvayi mayi chaanyatraiko	24. Within me, within you, and
र्व्यर्थं कुप्यसि मय्यसिहष्णुः ।	vishhnu-	within all exists nothing but
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं	vyartham kupyasi	the eternal Vishnu. Your anger
वाञ्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्	mayyasahishhnuhu	and impatience hold no
11 5811	bhava sama-chittah sarvatra	significance. To attain the
(tvam	stature of Vishnu swiftly,
	vaajnchhas-yachiraad-yadi	maintain equanimity
	vishhnutvam	consistently.
शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ	shatrau mitre putre bandhau	25. Refuse to squander your
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ ।	maa kuru yatnam vigraha-	energy in seeking affection or
सर्वेस्मिन्नपि पश्यात्मानं	sandhau	battling with friends, enemies,
सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्	sarvas-minnapi	children, or kin. Recognise
24	pashyaatmaanam	yourself in all beings and
11 7 7 11	sarvatrot-srija bhedaa-	relinquish entirely any sense of
	gnyaanam	duality.
कामं क्रोधं लोभं मोहं	kaamam krodham lobham	26. Abandon desires, wrath,
त्यक्त्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम् ।	moham	infatuations, and
पश्यति सोऽहम्	tyaktvaa.atmaanam bhaavaya	covetousness. Reflect on your
आत्मज्ञानविहीना मूढा-	ko.aham.h .	true essence. Those who
स्ते पच्यन्ते नरकनिगृद्धाः	aatmagyaana vihiinaa	remain oblivious to the Self are
• .	muudhaah	indeed foolish. Condemned to
॥ २६॥	te pachyante	hell, they endure eternal
	narakaniguudhaah	torment.
गेयं गीतानामसहस्रं	geyam giitaa naama sahasram	27. Consistently chant verses
ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्मम् ।	dhyeyam shriipati ruupama-	from the Gita, contemplate
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं	jasram	Vishnu in your heart through
देयं दीनजनाय च वित्तम्	neyam sajjana sange chittam	Vishnu Sahasranama, and sing
`	deyam diina-janaaya cha	His praises. Find joy in the
॥ २७॥	vittam	company of the virtuous and
		the sacred. Generously share
		your wealth with the less
		fortunate and the needy.
सुखतः क्रियते रामाभोगः	sukhatah kriyate raamaa-	28. One who succumbs to the
पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः ।	bhogaha	allure of pleasure exposes his
यद्यपि लोके मरणं शरणं	pash-chaaddhanta shariire	body to illness. Even though
	rogaha	death marks the conclusion of
तदपि न मुञ्चति पापाचरणम्	yadyapi loke maraNam	all things, humanity persists on
11 7८ 11	sharaNam	a sinful path.
	tadapi na mujnchati paap-	3 3 3. patin
	aacharaNam	
अर्थमनर्थं भावय नित्यं	arthamanartham bhaavaya	29. True prosperity lies not in
नास्तिततः सुखलेशः सत्यम् ।	nityam	wealth; it holds no lasting
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः	naasti-tatah sukhaleshah	happiness. Reflect on this
	satyam	perpetually. A wealthy man
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः	putraadapi dhana-bhaajaam	even fears his own son. Such is
॥ २९॥	bhiitihi	the way of riches universally.
	sarvatraishhaa vihitaa riitihi	the way of fielies universally.
	Jai vati aisiinaa viintaa intiili	1

	T	,
प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्य विवेकविचारम् ।	praaNaayaamam pratyaahaaram	30. Harmonise the life forces, untouched by external sway,
	nityaanitya vivekavichaaram	and discern the eternal from
जाप्यसमेतसमाधिविधानं	1	
कुर्ववधानं महदवधानम्	jaapyasameta-samaadhi-	the ephemeral. Utter the
३०	vidhaanam	divine name and calm the
	kurva-vadhaanam mahada- 	restless mind. Execute these
	vadhaanam	meticulously, with utmost
		diligence.
गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः	gurucharaNaambuja nirbhara	31. Oh seeker of the Guru's
संसारादचिराद्भव मुक्तः ।	bhakataha	divine grace! May your
सेन्द्रियमानसनियमादेवं	samsaaraada-chiraadbhava	liberation from Samsara swiftly
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम्	muktah	arrive. With disciplined senses
38	sendriya-maanasa- niyam-	and a restrained mind, you
11 4711	aadevam	shall encounter the Divine
	drakshyasi nija-hridayastham	residing within your heart!
	devam	
मूढः कश्चन वैयाकरणो	moodhah kash-chana vaiya-	32. In this way, a pedantic
डुःकृङ्करणाध्ययनधुरीणः ।	akaraNo	grammarian, entangled in rules
श्रीमच्छङ्करभगवच्छिष्यै-	dukrijNkaraNaadhyayana	and regulations, had his limited
र्बोधित आसीच्छोधितकरणः	dhuriNaha	perspective cleansed and was
	shriimachchhamkara-	enlightened by the disciples of
॥ ३२॥	bhagavachchhish-hyai	Shankara.
	bodhita aasich-chhodhita-	
	karaNah	
	-	
भज गोविन्दं भज गोविन्दं		
गोविन्दं भज मूढमते ।	Bhaja govindam bhaja	33. Worship Govinda, worship
	govindam	Govinda, worship Govinda, O
नामस्मरणादन्यमुपायं	govindam bhajamood-hamate	fool! Apart from chanting the
नहि पश्यामो भवाब्धितरणे	naamasmaraNaad-	names of Bhagavan, there is no
॥ ३३॥	anyamupaayam	other path to traverse life's
	nahi pashyaamo	vast ocean.
	bhavaabdhitaraNe	vasi ocean.
	Dilavaabuliitalaive	

Hari Aum Tat Sat

tavamithramsarvada.com bit.ly/tvmgita bit.ly/tvmmantras bit.ly/tvmvegan bit.ly/tvmudemy